आय और रोजगार का निर्धारण
(Determination of Income And Employment)

हम पढेंगे:

सामूहिक मांग, सामूहिक पूर्ति, प्रभावी मांग, उपभोग प्रवृत्ति - APC & MPC, बचत प्रवृत्ति- APS & MPS, निवेश गुणक, संतुलन आय का निर्धारण, न्यून मांग तथा आधिक्य मांग की समस्या - प्रभाव एवं ठीक करने के उपाय

1929 की महामंदी

रोजगार का प्रतिष्ठित सिद्धांत असफल

(एडम स्मिथ, रिकार्डो, जे. बी. से आदि)

लॉर्ड जे एम कींस की पुस्तक

'The General Theory of Employment, Interest and Money'

1936 मे प्रकाशित हुई।

इस पुस्तक के माध्यम से किंग्स ने ***सामूहिक मांग (Aggregate Demand)*** और ***सामूहिक पूर्ति (Aggregate Supply)*** की अवधारणाओं का प्रयोग किया।

उनके द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत को ***कीन्स का रोजगार सिद्धांत*** के नाम से जाना जाता है। जिसके अंतर्गत उन्होंने **प्रभावपूर्ण मांग (Effective Demand)** के सिद्धांत का प्रयोग किया।

कींस के अनुसार प्रभावपूर्ण मांग, ***कुल मांग*** के उस स्तर को कहते हैं जिसपर वह ***कुल पूर्ति*** के बराबर होती है।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*

कींस के आय एवं रोजगार के सिद्धांत के अनुसार,

आय स्तर = उत्पादन स्तर = रोजगार स्तर

Income Level = Output Level = Employment Level

प्रभावपूर्ण / प्रभावी मांग (Effective Demand)

सामूहिक मांग = सामूहिक पूर्ति

AD = AS

इस प्रकार कीन्स के अनुसार अर्थव्यवस्था में आए एवं रोजगार स्तर का निर्धारण मुख्य रूप से निम्न दो तत्वों पर निर्भर करता है:

1. सामूहिक मांग (Aggregate Demand)
2. सामूहिक पूर्ति (Aggregate Supply)

सामूहिक मांग (Aggregate Demand)

एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की संपूर्ण मांग को ही सामूहिक मांग कहा जाता है। और यह अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में व्यक्त की जाती है।

इस प्रकार एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं पर किए गए कुल व्यय के संदर्भ में सामूहिक मांग की माप की जा सकती है।

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि **सामूहिक मांग उस व्यय को बताती है जिसे एक देश के निवासी आय के दिए हुए स्तर पर वस्तुओं तथा सेवाओं को खरीदने के लिए खर्च करने को तैयार है।**

सामूहिक मांग = कुल व्यय (उपभोग व्यय और निवेश व्यय)

सामूहिक मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय

AD = C + I

सामूहिक मांग की विशेषताएं

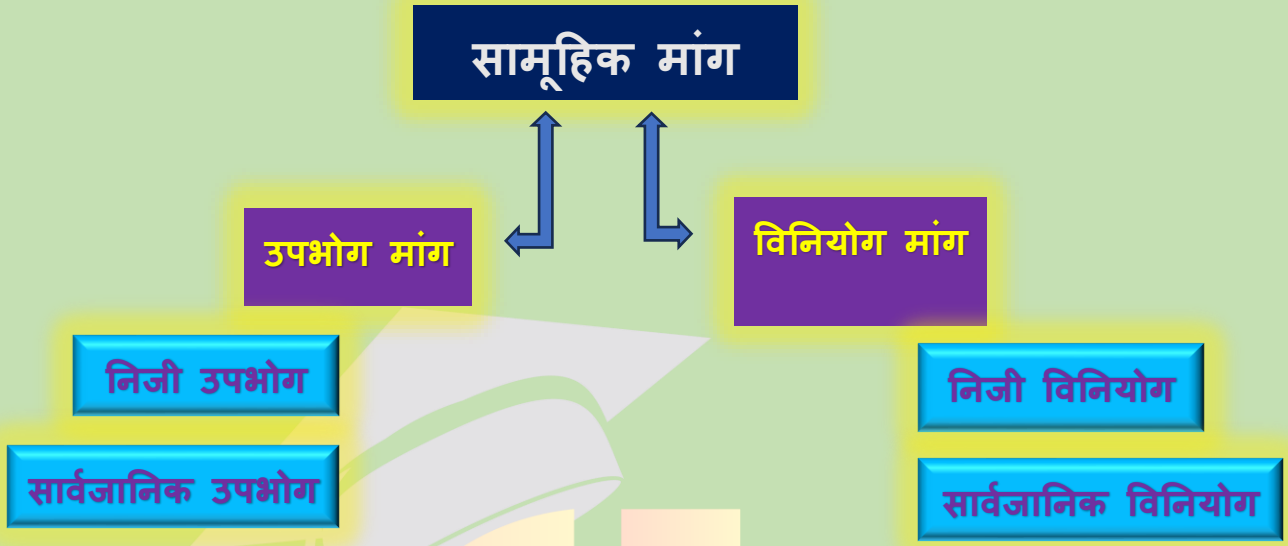

सामूहिक मांग अनुसूची (AD Schedule)

Income (Y)	Consumption (C)	Investment (I)	Aggregate Demand (AD)
0	100	200	300
200	200	200	400
400	300	200	500
600	400	200	600
800	500	200	700
1000	600	200	800

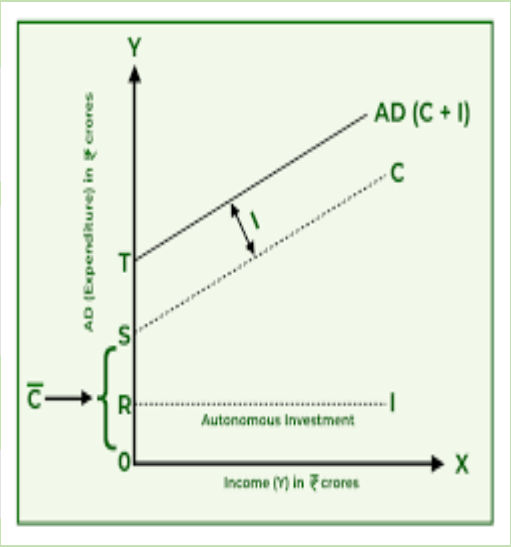

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सामूहिक मांग की माप अथवा सामूहिक मांग के घटक

बंद अर्थव्यवस्था (Closed Economy)

AD = C + I

C- उपभोग व्यय I - निवेश व्यय

AD = C + I + G

G - सरकार

खुली अर्थव्यवस्था (Open Economy)

सामूहिक मांग = उपभोग+ निवेश + सरकारी व्यय + (निर्यात - आयत)

AD = C + I + G + (X-M)

C- घरेलू उपभोग व्यय I - निजी एवं सार्वजनिक निवेश

G - सरकारी उपभोग व्यय X-M = शुद्ध निर्यात (निर्यात - आयात)

सामूहिक पूर्ति (Aggregate Supply)

इस सामूहिक पूर्ति की धारणा का संबंध देश के समस्त उत्पादकों के दौरा की जाने वाली वस्तुओं बस सेवाओं की कुल पूर्ति से है।

देश में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है। इस प्रकार सामूहिक पूर्ति एवं राष्ट्रीय आय या सकल घरेलू उत्पाद समान होते हैं।

अर्थात्,

सामूहिक पूर्ति = सकल घरेलू उत्पाद = कुल साधन आय

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

AS = GDP = Y

(Y = C + S)

AS = C + S

C - उपभोग S - बचत

AS अनुसूची

Income (Y)	Consumption (C)	Saving (S)	Aggregate Supply (AS = C + S)
0	100	-100	0
200	200	0	200
400	300	100	400
600	400	200	600
800	500	300	800
1000	600	400	1000

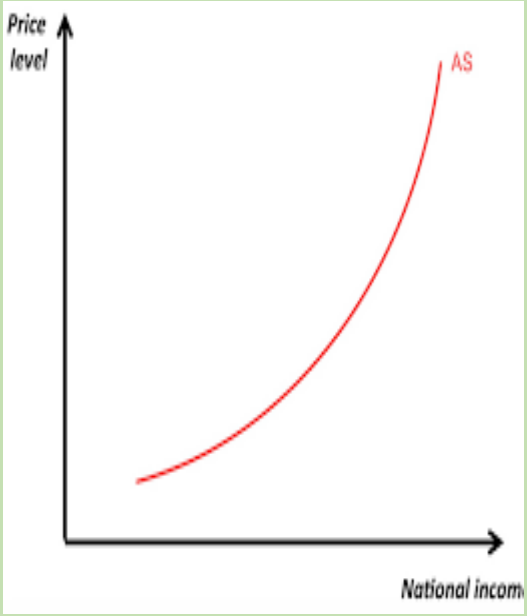

प्रभावपूर्ण मांग बिंदु (Effective Demand Point)

आय (Y)	सामूहिक मांग (AD)	सामूहिक पूर्ति (AS)
0	300	**0**
200	400	200
400	500	400
600	**600**	**600**
800	700	800
1000	800	1000

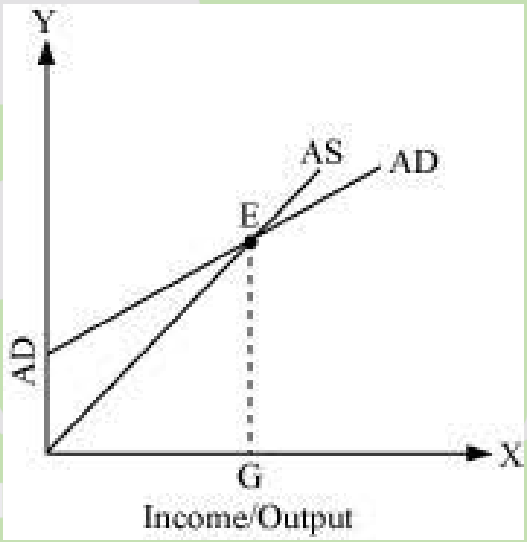

उपभोग फलन, बचत फलन और विनियोग
(Consumption Function, Saving Function and Investment Function)

उपभोग (Consumption)

राष्ट्रीय आय का वह भाग जिसे वस्तु और सेवाओं पर व्यय किया जाता है, उसे कुल उपभोग कहा जाता है।

आय = उपभोग + बचत

Y = C + S

उपभोग फलन (Consumption Function

अर्थव्यवस्था में, आय और उपभोग के बीच फलनात्मक संबध को उपभोग फलन कहते है।

कुल उपभोग व्यय मुख्य रूप से आय पर निर्भर करता है।

इस प्रकार, उपभोग आय का फलन है।

$$C = f(Y)$$

$$C = C + bY$$

उपभोग प्रवृत्ति (Propensity to Consume)

आय और उपभोग के बीच आनुपातिक संबंध को उपभोग प्रवृत्ति कहते है।

उपभोग प्रवृत्ति ये बताता है आय का कितना भाग उपभोग पर व्यय किया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

उपभोग प्रवृत्ति के प्रकार

1. औसत उपभोग प्रवृत्ति (Average Propensity to Consume)
2. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)

औसत उपभोग प्रवृत्ति (Average Propensity to Consume)

कुल उपभोग का कुल आय के साथ अनुपात को औसत उपभोग प्रवृत्ति कहते है।

पीटरसन के अनुसार, **"औसत उपभोग प्रवृत्ति एक विशेष आय स्तर पर उपभोग तथा आय का अनुपात है"।**

औसत उपभोग प्रवृत्ति= उपभोग की मात्रा / आय

APC= C / Y

उदाहरण:

यदि देश को कुल आय (Y) ₹100 करोड़ है और उपभोग (C) ₹80 करोड़ है, तो औसत उपभोग प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए।

हल: $APC = \frac{C}{Y} = = \frac{80}{100} = 0.8$

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)

आय में होने वाले परिवर्तन से उपभोग में होने वाले परिवर्तन में आनुपातिक संबंध को सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते है।

पीटरसन के अनुसार, **"सीमांत उपभोग प्रवृत्ति से हमारा अभिप्राय आय में परिवर्तन से प्रेरित उपभोग व्यय से है"।**

MPC= ΔC / ΔY

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

उदाहरण:

यदि आय ₹20 करोड़ से बढ़कर ₹40 करोड़ का परिवर्तन हुआ तथा उपभोग ₹16 से बढकर ₹32 हो जाती है, तो सीमांत उपभोग प्रवृत्ति की गणना करो।

हल: **ΔC = 32 – 16 = 16;** **ΔY = 40 – 20= 20**

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y} = \frac{16}{20} = 0.8$$

बचत (Save): आय का वह भाग जो उपभोग के बाद बचता है, उसे बचत कहते है।

$$S = Y - C$$

बचत फलन (Saving Function)

कींस के अनुसार बचत आय का फलन है, अर्थात बचत आय पर निर्भर करती है।

$$S = f(Y)$$

$$S = -\bar{C} + (1-b)Y$$

बचत प्रवृत्ति (Propensity to Consume)

आय और बचत के बीच आनुपातिक संबध को बचत प्रवृत्ति कहते है।

बचत प्रवृत्ति के प्रकार (Types of Propensity to Save)

1. औसत बचत प्रवृत्ति (Average Propensity to Save)
2. सीमांत बचत प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Save)

औसत बचत प्रवृत्ति (Average Propensity to Save)

कुल आय और कुल बचत के बीच के आनुपातिक संबंध को औसत बचत प्रवृत्ति कहते है।

औसत बचत प्रवृत्ति = बचत / आय

$$APC = S / Y$$

उदाहरण: **किसी अर्थव्यवस्था को आय (Y) ₹100 करोड़ है और बचत (S) ₹30 है तो औसत बचत प्रवृत्ति ज्ञात करें।**

हल: $APS = \frac{S}{Y} = = \frac{30}{100} = 0.3$

सीमांत बचत प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Save)

बचत में होने वाले परिवर्तन तथा आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात सीमांत बचत प्रवृत्ति कहते है।

$$MPS = \Delta S / \Delta Y$$

उदाहरण: यदि उपभोग आय ₹100 करोड़ से बढ़कर ₹120 करोड़ होती है इससे बचत ₹20 करोड़ से बढ़कर ₹30 करोड़ हो जाती है, सीमांत बचत प्रवृत्ति कहते है।

$\Delta S = 30 - 20 = 10$ $\Delta Y = 120 - 100 = 20$

$$MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y} = \frac{10}{20} = 0.5$$

औसत उपभोग प्रवृत्ति और औसत बचत प्रवृत्ति में संबंध

खर्च की गई आय का प्रतिशत उपभोग करने की प्रवृत्ति है। बचाई गई (कर-पश्चात्) आय का प्रतिशत बचत करने की प्रवृत्ति है। उपभोग करने की औसत प्रवृत्ति और बचत करने की औसत प्रवृत्ति का योग हमेशा एक के बराबर होता है।

$$APC + APS = 1$$

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और सीमांत बचत प्रवृत्ति में संबंध

सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमान्त बचत प्रवृत्ति में संबंध-सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमान्त बचत प्रवृत्ति का योग सदैव एक (इकाई) के बराबर होता है।

$MPC + MPS = 1$

यदि किसी एक MPC (MPS) का मान दिया हो तो MPS (MPC) का मूल्य ज्ञात किया जा सकता है। यदि MPC या MPS में किसी एक का मूल्य घटता है तो दूसरे के मूल्य में वृद्धि होती है।

उपभोग प्रवृत्ति के निर्धारक कारक:

1. आय (Income)
2. आय का बंटवारा (Distribution of Income)
3. कीमत एवं मजदूरी स्तर (Price and Wages Level)
4. निगमों की व्यवसायिक नीति (Business Policy of Corporation)
5. अप्रत्याशित लाभ एवं हानियां (Unexpected Profits and Losses)
6. जनसंख्या की संरचना (Structure of Population)
7. व्यय पर निजी क्षेत्र के प्रभाव (Effect of Private Sector on Expenditure)
8. राजकोषीय नीति (Fiscal Policy)
9. ब्याज की दर (Rate of Interest)

विनियोग एवं विनियोग फलन (Investment Function)

विनियोग/ निवेश:

पूंजीगत वस्तुओं के भंडार में वृद्धि करना निवेश कहलाता है।

कींस के अनुसार निवेश दो प्रकार के हो सकते है:

वित्तीय विनियोग (Financial Investment):.

पुराने भंडारों या शेयरों को खरीदना।

वास्तविक विनियोग (Real Investment)

नई पूंजीगत पदार्थों जैसे, भूमि, मशीन, भवन आदि में व्यय करना।

कींस के अनुसार, **"विनियोग से अभिप्राय पूंजीगत पदार्थों में होने वाली वृद्धि से है"।**

श्रीमती जॉन रॉबिंसन के अनुसार, **"विनियोग से अभिप्राय वस्तुओं के वर्तमान भंडार में वृद्धि करने से है"।**

पूंजी की नई परिसंपत्तियों पर किए जाने वाले व्यय को विनियोग कहते है जिससे की उत्पादकता में प्रत्यक्ष रूप में वृद्धि लायी जा सके"।

विनियोग के प्रकार (Types of Investment)

प्रेरित विनियोग (Induced Investment):

प्रेरित विनियोग मुख्य रूप से मांग द्वारा प्रेरित होता है। जब देश में उपभोग पदार्थों की मांग बढ़ती है तो मांग को पूरा करने के लिए उत्पादन बढ़ाना जरूरी हो जाता है। उत्पादन तभी बढ़ता है जब विनियोग बढ़े।

इस प्रकार के निवेश को प्रेरित निवेश के नाम से जाना जाता है।

प्रेरित निवेश आय पर निर्भर करता है, इसलिए प्रेरित निवेशकों आय का फलन कहते हैं।

प्रेरित निवेशकों प्रभावित करने की प्रेरणा निम्नलिखित दो तत्वों में होती:

पूंजी की सीमांत उत्पादकता (Marginal Efficiency of Capital):

पूंजी की सीमांत उत्पादकता किसी नई पूंजी संपत्ति से प्राप्त होने वाले अनुमानित लाभ की दर को कहते हैं।

पूंजी की सीमांत उत्पादकता से अभिप्राय है किसी पूंजीगत पदार्थ को एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने से उसकी लागत की तुलना में मिलने वाले लाभ की अनुमानित दर।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

$$MEC = \frac{\text{प्रत्याशित आय (Y)}}{\text{लागत या पूर्ति कीमत}} \times 100$$

ब्याज की दर (Rate of Interest):

कींस के अनुसार ब्याज से अभिप्राय किसी निश्चित समय के लिए तरलता से परित्याग से प्राप्त होने वाला परितोषण हैं।

स्वायत्त या स्वतंत्र निवेश (Autonomous Investment)

यह आय के स्तर या ब्याज की दर से प्रभावित नहीं होता। सरकार द्वारा लोकहित सेवाओं जैसे – रेलों, सड़कों, डाकखानों, विद्युत केंद्रों आदि के निर्माण में किया गया विनियोग।

निवेश गुणक और उसका कार्यकरण

Investment Multiplier and It's Mechanism

कींस का विचार था कि *अर्थव्यवस्था में जब कोई स्वायत्त निवेश किया जाता है तब आय में केवल निवेश के आकार में वृद्धि नहीं होती, बल्कि आय में निवेश के कई गुना अधिक वृद्धि होती है।*

निवेश की तुलना में आय में जीतने गुना वृद्धि होती है, उसे निवेश गुणक कहते हैं।

कींस का गुणक का सिद्धांत निवेश तथा आय के बीच संबंध स्थापित करता है।

गुणक की धारणा निवेश में प्रारंभिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप आय में ***इस प्रकार गुणक निवेश में होने वाले परिवर्तन के कारण आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात होता है।***

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सूत्र,

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

ΔY = आय में परिवर्तन

ΔI = निवेश में परिवर्तन

उदाहरण: यदि किसी अर्थव्यवस्था में ₹10 करोड़ का प्रारंभिक निवेश करने से आय में अंतिम वृद्धि ₹ 60 करोड़ की है तो गुणक की गणना कीजिए।

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I} = \frac{60}{10} = 6$$

यह निवेश गुणक 6 है, जो यह दर्शाता है कि निवेश की तुलना में आय में 6 गुना आधिक वृद्धि हुई है।

परिभाषाएं

कींस के अनुसार, **"निवेश गुणक से ज्ञात होता है कि जब कुल निवेश में वृद्धि की जाएगी तो आय में जो वृद्धि होगी वह निवेश में होने वाली वृद्धि से K गुना अधिक होगी"।**

प्रो. डिल्लार्ड के अनुसार, **"निवेश में की गई वृद्धि के परिणामस्वरूप आय होने वाली वृद्धि के अनुपात को निवेश गुणक कहा जाता है"।**

गुणक का सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) के साथ संबंध

गुणक का आकार सीमांत उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति अधिक है, तो गुणक भी अधिक होगा। इसके विपरीत यदि सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कम है तो गुणक भी कम होगा।

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सूत्र, $$K = \frac{1}{1-MPC}$$

यदि MPC 0.5 है तो गुणक,

$$K = \frac{1}{1-0.5} = \frac{1}{0.5} = \frac{10}{5} = 2$$

यदि MPC 0.75 है तो गुणक,

$$K = \frac{1}{0 - 0.75} = \frac{1}{0.25} = \frac{100}{25} = 4$$

सीमांत बचत प्रवृत्ति और गुणक में संबंध

सीमांत बचत प्रवृत्ति और गुणक में में विपरीत संबंध होता है।

अर्थात्

यदि MPS का मुख्य अधिक है तो गुणक का मुख्य कम होगा और यदि MPS कम हो तो गुणक का मुख्य अधिक होगा।

$$K = \frac{1}{MPS}$$

यदि, MPS = 0.5 है तो गुणक ? $K = \frac{1}{0.5} = \frac{10}{5} = 2$

यदि MPS = 0.25 है तो गुणक ? $K = \frac{1}{0.25} = \frac{100}{25} = 4$

गुणक की यंत्रकला/ कार्यकरण (Process of Multiplier)

अनुकूल प्रक्रिया (Forward Action)

निवेश के बढने पर आय में कई गुना वृद्धि

प्रतिकूल प्रक्रिया (Backward Action)

निवेश के कम होने पर आय में कई गुना वृद्धि

चक्र	प्रारंभिक निवेश Initial Investment	आय में वृद्धि Increase in Income	उपभोग में वृद्धि Increase in Consumption	बचत में वृद्धि Increase in Saving
①	100	100 →	50 →	50
②		50 →	25 →	25
③		25 →	12.5 →	12.5
④		12.5 →	6.25 →	6.25
⑤		6.25 →	3.12 →	3.12
⑥		3.12 →	1.56 →	1.56
	कुल	200	100	100

संख्यात्मक उदहारण:

गुणक का मूल्य ज्ञात करें, यदि a) MPS - 0.25 b) 0.50

ⓐ $MPS = 0.25$

$K = \frac{1}{MPS}$

$= \frac{1}{0.25}$

$= \frac{100}{25}$

$= 4$

ⓑ $MPS = 0.50$

$K = \frac{1}{MPS}$

$= \frac{1}{0.50}$

$= \frac{100}{50}$

$= 2$

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

गुणक ज्ञात करे यदि, a) MPC = 0.80 b) MPC = 0.75

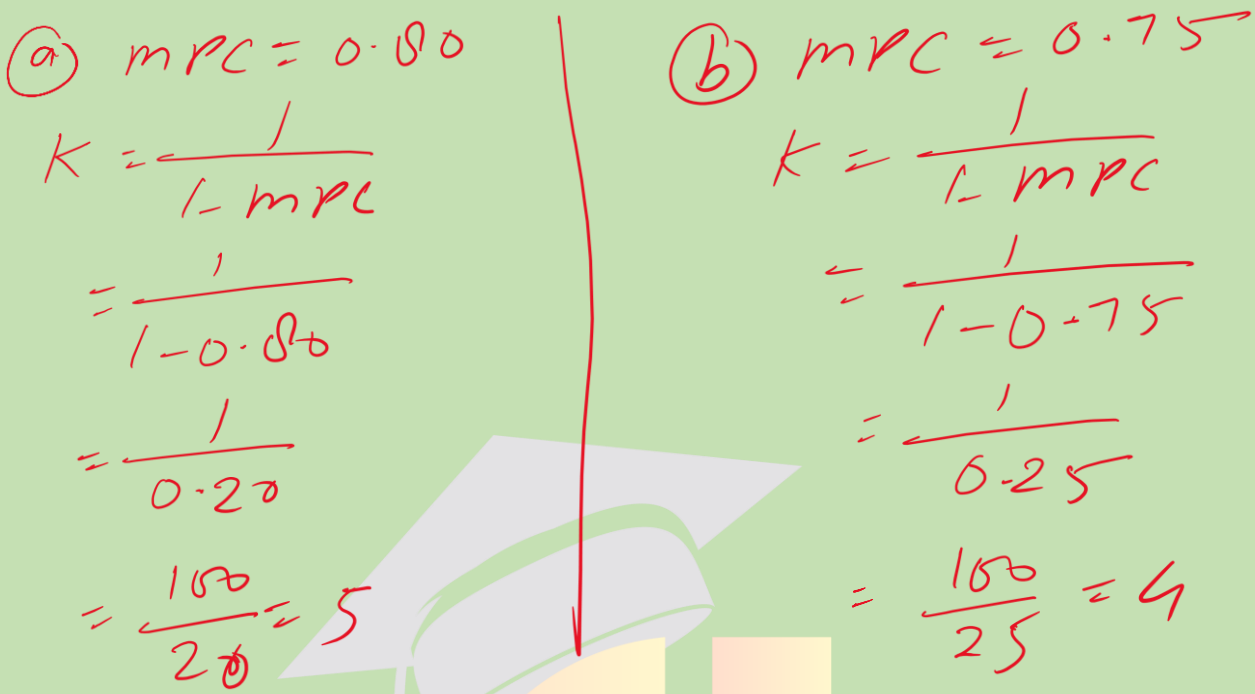

कींस का आय एवं रोजगार का सिद्धांत

Keynesian Theory of Income and Employment

अल्पकालीन आय, रोजगार तथा उत्पादन का संतुलन

जे एम कींस ने अपनी पुस्तक ***'जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लॉयमेंट इंटरेस्ट एंड मनी'*** में आय एवं रोजगार के नए सिद्धांत को विकसित किया है।

कींस का रोजगार सिद्धांत **प्रभावपूर्ण मांग** की अवधारणा पर आधारित है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

आय अथवा उत्पादन का संतुलन स्तर क्या है?

आय या रोजगार के संतुलन स्तर से आशय आए या उत्पादन के उस स्तर से है जिस पर संपूर्ण अर्थव्यवस्था की सामूहिक पूर्ति सामूहिक मांग (AD=AS) के बराबर होती है।

अथवा

जिस बिंदु पर अर्थव्यवस्था की *बचत एवं विनियोग* समान हो, उस बिंदु को संतुलन आय स्थिर कहा जाता है।

S = I

इस प्रकार उत्पादन या रोजगार के संतुलन स्तर को दो प्रकार से समझा जा सकता है।

1. सामूहिक पूर्ति = सामूहिक मांग दृष्टिकोण (AD = AS Approach)
2. बचत = विनियोग दृष्टिकोण (S = I Approach)

सामूहिक पूर्ति = सामूहिक मांग दृष्टिकोण (AD = AS Approach)

इसे प्रभावी मांग का *कीन्सीयन दृष्टिकोण* भी कहा जाता है।

प्रो. कींस के अनुसार, **"एक अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय रोजगार के उसी स्तर पर संतुलन में होता है जहाँ सामूहिक मांग (AD) और सामूहिक पूर्ति (AS) बराबर होते हैं"।**

इस प्रकार जिंस बिंदु पर सामूहिक मांग और सामूहिक पूर्ति बराबर होते हैं उसे ही कीन्स ने प्रभावपूर्ण मांग कहा है।

किंग्स के अनुसार आय एवं रोजगार के दो प्रमुख निर्धारक है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सामूहिक मांग और सामूहिक पूर्ति

सामूहिक मांग (Aggregate Demand)

सामूहिक मांग एक अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग को प्रकट करती है।

सामूहिक मांग को अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में प्रकट किया जाता है। जिसमें उपभोग व्यय और विनियोग व्यय दोनों शामिल हैं।

सामूहिक मांग = उपभोग व्यय + विनियोग व्यय

AD = C + I

सामूहिक पूर्ति (Aggregate Supply)

सामूहिक पूर्ति किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं के कुल उत्पादन को प्रदर्शित करती है।

अन्य शब्दों में, सामूहिक पूर्ति वास्तव में राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय के बराबर होते हैं।

AS = C + S

संतुलन आय का निर्धारण (Determination of Equilibrium level of Income)

एक अर्थव्यवस्था में आय का संतुलन स्तर उस बिंदु पर स्थापित होता है जहाँ सामूहिक मांग अनुसूचित एवं सामूहिक पूर्ति अनुसूची में घटक बराबर हो जाते हैं।

AD = AS ⇒ संतुलित आय

आय का स्तर	सामूहिक मांग	सामूहिक पूर्ति
Y	AD = C+ I	AS = C+ S
0	150	0
100	200	100
200	250	200
300	**300**	**300**
400	350	400
500	400	500

चित्रीय निरूपण:

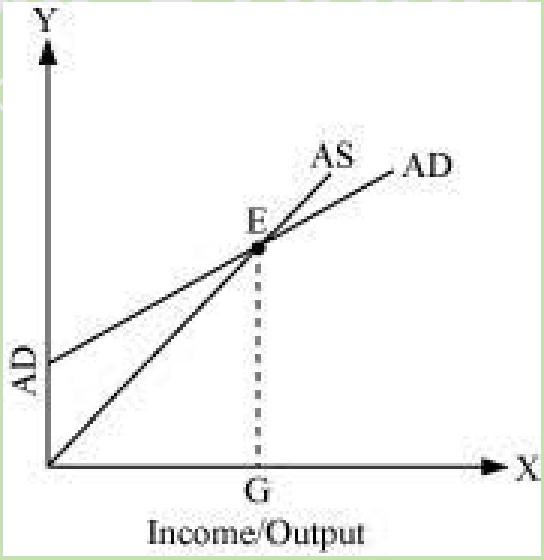

बचत = विनियोग दृष्टिकोण (S = I Approach)

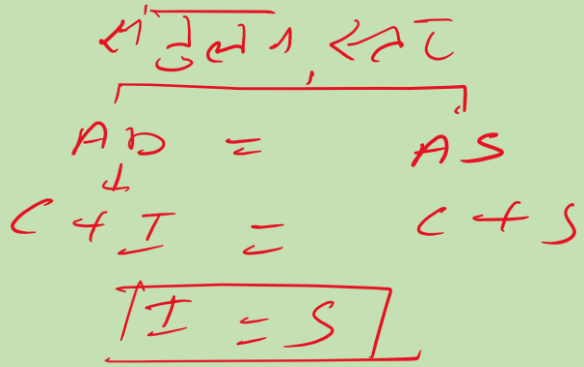

Y	C	S	I
0	50	-50	100
100	100	0	100
200	150	50	100
300	**200**	**100**	**100**
400	250	150	100
500	300	200	100

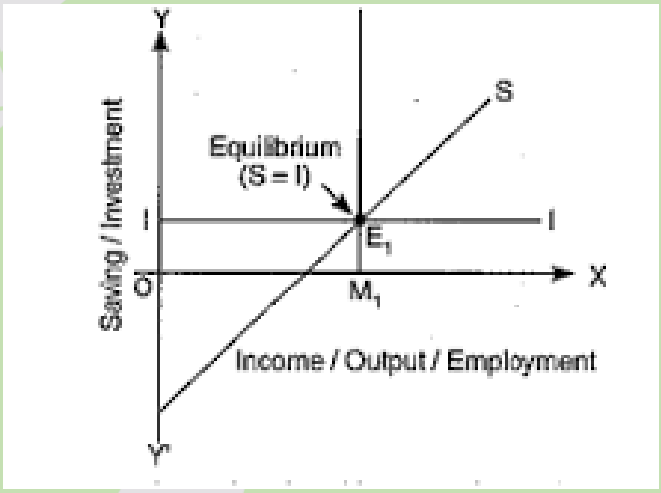

न्यून मांग एवं अतिरिक्त मांग
(DEFICIENT DEMAND AND EXCESS DEMAND)

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

यह आवश्यक नहीं है कि अर्थव्यवस्था में सामूहिक मांग (AD) और सामूहिक पूर्ति (AS) का संतुलन हमेशा ही पूर्ण रोजगार आय स्तर पर हो। यह उससे कम स्तर पर भी हो सकता है और उससे अधिक स्तर पर भी हो सकता है।

इसी से अर्थव्यवस्था में ***न्यून मांग अथवा अतिरेक मांग*** की समस्या उत्पन्न होती है।

न्यून मांग (Deficient Demand)

यदि अर्थव्यवस्था में आय का संतुलन इस तरह पूर्ण रोजगार के स्तर से पहले निर्धारित हो जाता है, तब इसे न्यून मांग की दशा कहा जाता है। **कींस** ने इस दशा को **अपूर्ण रोजगार संतुलन** कहकर पुकारा हैं।

कींस के अनुसार, **"न्यून मांग वहाँ दशा है, जिसमें अर्थव्यवस्था में सामूहिक मांग पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक सामूहिक पूर्ति से कम होती है"।**

न्यून मांग

AD < AS

न्यून मांग अवस्फीतिक के अंतराल (Deflationary Gap) को बताती है।

किसी अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति को बनाए रखने के लिए। जितनी सामूहिक मांग की आवश्यकता होती है। यदि सामूहिक मांग उससे कम हो तो इन दोनों के अंतर को अवस्फीतिक अंतराल कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में **सामूहिक पूर्ति सामूहिक मांग से जितनी अधिक होती है, उस अंतर को अवस्फीतिक अंतराल कहा जाता है।**

न्यून मांग = अवस्फीतिक अंतराल

अवस्फीतिक अंतराल = पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक सामूहिक मांग – अपूर्ण रोजगार स्तर पर वास्तविक सामूहिक मांग

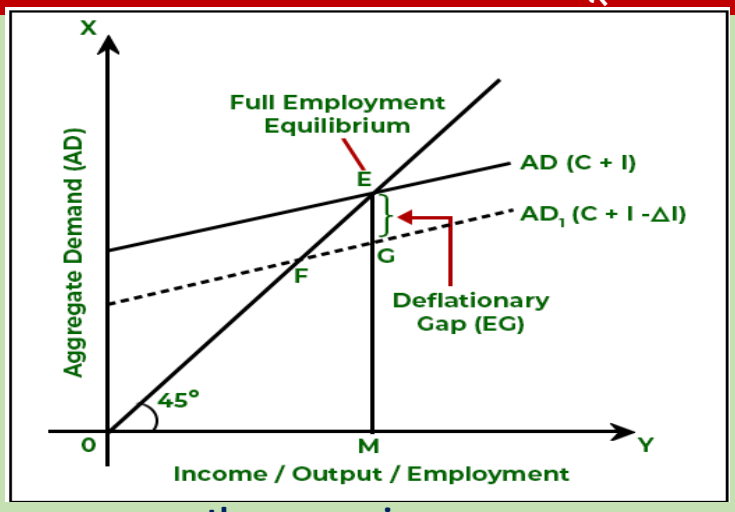

न्यून मांग की विशेषताएँ (Features of Deficient Demand)

- न्यून मांग की दशा में सामूहिक मांग का स्तर पूर्ण रोजगार स्तर के लिए आवश्यक सामूहिक मांग से कम होता है।
- इस स्थिति में माँग के पर्याप्त न होने के कारण उत्पादन कम हो जाता है और अनैच्छिक बेरोजगारी उत्पन्न हो जाती है।
- न्यून मांग की स्थिति में सामूहिक मांग पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक सामूहिक पूर्ति से कम होती है। अर्थात न्यून मांग की दशा में अपूर्ण रोजगार संतुलन पाया जाता है।
- सामूहिक पूर्ति सामूहिक मांग से जितनी अधिक होती है, उस अंतर को **अवस्फीतिक अंतराल** कहा जाता है।
- अवस्फीतिक अंतराल इस बात का सूचक है कि यदि प्रभावी मांग को बढ़ा कर इसे दूर किया जाए तो संतुलन स्तर पर पूर्ण रोजगार के स्तर की ओर बढ़ सकता है कि से अनैच्छिक बेरोजगारी दूर होगी।

न्यून मांग के कारण (Reasons for Deficient Demand)

किसी भी देश में न्यून मांग की स्थिति निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न हो सकती है:

- सरकार द्वारा करेंसी की पूर्ति में कमी करने अथवा बैंको द्वारा साख निर्माण को हटा देने के कारण देश में कुल मुद्रा की पूर्ति में कमी होना।
- बैंक दर में वृद्धि से विनियोग मांग में कमी होना।
- करों में वृद्धि के परिणामस्वरूप स्वायत्त आय एवं उपभोग मांग में कमी।
- सार्वजनिक मांग में कमी
- बचत प्रवृत्ति में वृद्धि के कारण उपभोग मांग में कमी।

- निर्यात में कमी

न्यून मांग के प्रभाव (Effects of Deficient Demand)

न्यून मांग के अर्थव्यवस्था पर प्रभावों को तीन आधार पर समझ सकते हैं:

- उत्पादन पर प्रभाव
- रोजगार पर प्रभाव
- कीमतों पर प्रभाव

उत्पादन पर प्रभाव (Effects on Production)

- न्यून मांग के कारण उत्पादक वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन घटाने के लिए बाध्य होंगे।
- इस कारण वे अपनी वर्तमान उत्पादन क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाएंगे।
- इसका प्रभाव यह होगा कि देश के उत्पत्ति के साधनों का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाएगा।
- फलत: कुछ वर्तमान फर्में अपना कार्य बंद कर देंगी तथा नई फर्म बाजार में प्रवेश नहीं कर पाएगी।
- स्थिति का एक महत्वपूर्ण प्रभाव यह होगा कि उत्पादन की लागत में वृद्धि होगी।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

रोजगार पर प्रभाव (Effects on Employment)

मांग की कमी के कारण उत्पादों को वस्तु एवं सेवाओं के अपने उत्पादन में कमी करनी पड़ेगी। इसका सामान्य प्रभाव यह होगा कि देश में रोजगार के स्तर में कमी आ जाएगी।

कीमतों पर प्रभाव (Effects on Prices)

- यदि देश में कुल मांग कुल पूर्ति की तुलना में कम है तो इसका सामान्य प्रभाव यह होगा कि देश में कीमत स्तर में कमी आ जाएगी।
- कीमत स्तर में कमी आने पर प्रभाव नहीं होगा कि उत्पादों के लाभ के मार्जिन में कमी आ जाएगी।
- उपभोक्ताओं को कम कीमत पर वस्तुएं एवं सेवाएं प्राप्त हो सकेंगी।

न्यून मांग को ठीक करने के उपाय

(Measures of Correcting Deficient Demand)

न्यून मांग को ठीक करने की प्रमुखता तीन उपाय किए जा सकते हैं:

- राजकोषीय उपाय (Fiscal Policy)
- मौद्रिक उपाय (Monetary Policy)
- अन्य उपाय (Other Measures)

राजकोषीय उपाय/ राजकोषीय नीति (Fiscal Policy)

सार्वजनिक व्यय, कराधान और सार्वजनिक ऋण से संबंधित उपायों को राजकोषीय उपाय कहा जाता है। और इनसे संबंधित नीति को ***राजकोषीय नीति*** कहा जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

राजकोषीय नीति मुख्य रूप से बजट के माध्यम से काम करती है तथा इसे बजट नीति भी कहा जाता है।

इसके अंतर्गत सरकार द्वारा न्यून मांग को ठीक करने के लिए निम्नलिखित रीतियों का प्रयोग किया जा सकता है:

सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure):

सरकार द्वारा निर्माण को ठीक करने के लिए सार्वजनिक व्ययों में वृद्धि किया जाता है।

करारोपण (TAXATION): सरकार द्वारा करो के भार में कमी कर दी जाती है।

सार्वजनिक ऋण (PUBLIC DEBT): सरकार द्वारा सार्वजनिक ऋण की मात्रा में कमी की जाती है।

घाटे का वित्त (DEFICIT BUDGET): न्यून मांग को ठीक करने के लिए सरकार द्वारा घाटे का बजट बनाने पर ज़ोर दिया जाता है।

मौद्रिक नीति (Monetary Policy)

मौद्रिक नीति का संचालन देश के केंद्रीय बैंक द्वारा किया जाता है।

इसके अंतर्गत निम्नलिखित रीतियों का प्रयोग किया जाता है:

- **बैंक दर (Bank Rate):** बैंक दर में कमी
- **खुले बाजार की क्रियाएं (Open Market Operations):** खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों को केंद्रीय बैंक द्वारा खरीदा जाता है।
- **नकद कोष अनुपात (Cash Reserve Ratio – CRR)-** CRR में कमी
- **सांविधिक तरलता अनुपात (SLR):** केंद्रीय बैंक द्वारा SLR में कमी कर दिया जाता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

गुणात्मक उपाय:

- ऋणों की सीमांत अवश्यकता में परिवर्तन
- साख की राशनिंग
- प्रत्यक्ष कार्यवाही
- नैतिक प्रभाव

अन्य उपाय:

- **आयत निर्यात नीति (Export and Import Policy)**
  आयात कम करने और निर्यात बढ़ाने के प्रयास करना।
- **समर्थन मूल्य नीति (Support Price Policy)**
  ऊंचे समर्थन मूल्य पर सरकार द्वारा खरीदारी करना।
- **मजदूरी नीति (Wage Policy)**
  स्थिर मजदूरी दर न्यून मांगों को ठीक करने के लिए सहायक होती है।

अतिरेक या अत्यधिक मांग (Excess Demand)

अतिरिक्त मांग तक उत्पन्न होती है जब सामूहिक मांग पूर्ण रोजगार स्तर पर सामूहिक पूर्ति से अधिक होती है।

इस प्रकार, अतिरिक्त मांग वह दशा है जिसमें सामूहिक मांग अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक सामूहिक पूर्ति से अधिक होती है।

अतिरेक मांग

AD > AS

अतिरिक्त मांग की इस स्थिति में सामूहिक मांग पर्याप्त मांग से अधिक होगी।

फलतः मांग में वृद्धि की रोजगार और उत्पादन स्तर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी, क्योंकि सभी ***साधनों को पहले ही पूर्ण रोजगार*** मिल चुका है।

ऐसी स्थिति में, जबकि सामूहिक मांग सामूहिक पूर्ति से अधिक है। ***वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बढ़ने लगती है*** और मुद्रास्फीति की दशा उत्पन्न हो जाती है।

अतिरेक मांग स्फीतिक अंतराल (Inflationary Gap) को बताती है।

किसी अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति को बनाए रखने के लिए जितने, सामूहिक मांग की आवश्यकता पड़ती है, उससे अधिक सामूहिक मांग के अंतर के माप को **स्फीतिक अंतराल** कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में, **सामूहिक मांग सामूहिक पूर्ति से जितनी अधिक होती है उस अंतर को स्फीतिक अंतराल कहते हैं।**

अतिरेक मांग = स्फीतिक अंतराल

स्फीतिक अंतराल =वास्तविक सामूहिक मांग – पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक सामूहिक मांग

चित्र:

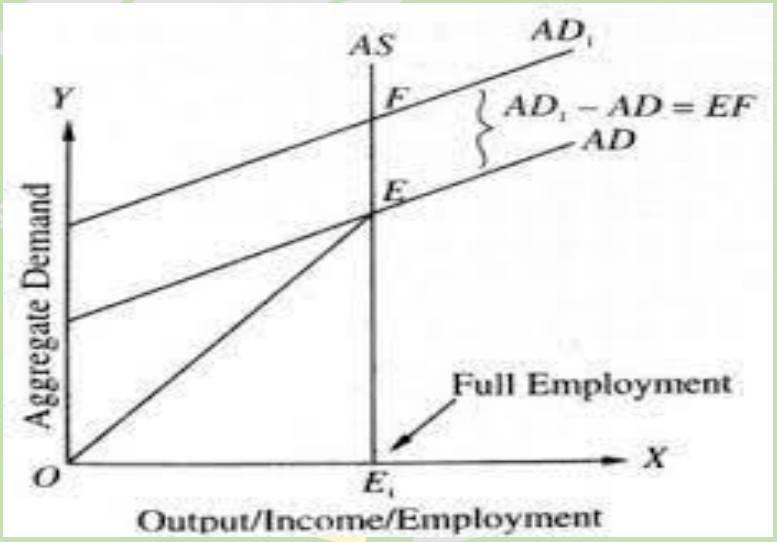

अतिरिक्त मांग की विशेषताएँ (Features of Excess Demand)

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

- जब वर्तमान सामूहिक मांग पूर्ण रोजगार की सामूहिक पूर्ति से अधिक हो जाती तो इस अतिरिक्त मांग की अवस्था कहलाती है।
- ऐसी स्थिति में सामूहिक मांग पर्याप्त मांग से अधिक है, फलत: मांग में वृद्धि की रोजगार और उत्पादन के स्तर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती।
- सामूहिक मांग सामूहिक पूर्ति से जितनी अधिक होती है उस अंतर को स्फीतिक अंतराल अंतराल कहा जाता है।

- यह स्फीतिक अंतराल जितना अधिक होगा, अतिरिक्त मांग भी उतनी अधिक होगी अर्थात स्फीतिक अंतराल अतिरिक्त मांग के माप को बताता है।
- इस अवस्था में अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होने लगती है।

अतिरिक्त मांग उत्पन्न होने के कारण (Reasons of Arising Excess Demand)

किसी भी देश में अतिरिक्त मांग की स्थिति निम्नलिखित कारणों से उत्पन्न हो सकती है:

- सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारण सरकार द्वारा की जाने वाली वस्तुओं व सेवाओं की मांग में वृद्धि।
- करों में कमी के परिणामस्वरूप व्यय योग्य आय एवं उपभोग मांग में वृद्धि।
- हीनार्थ प्रबंधन के फलस्वरूप मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि।
- साख विस्तार से मांग में वृद्धि।
- विनियोग मांग में वृद्धि।
- उपभोग प्रवृत्ति में वृद्धि के फलस्वरूप का उपभोग मांग में वृद्धि।
- निर्यात के लिए वस्तुओं की मांग में वृद्धि।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अतिरिक्त मांग के प्रभाव (Effects of Excess Demand)

रोजगार पर प्रभाव (Effects on Employment)

अतिरिक्त मांग की स्थिति में यह रोजगार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अर्थव्यवस्था पहले से ही पूर्ण रोजगार की स्थिति में होती है।

उत्पादन पर प्रभाव (Effects on Production)

रोजगार तथा उत्पादन के बीच प्रत्यक्ष संबंध होता है अर्थात जब रोजगार बढ़ता है तो उत्पादन में भी वृद्धि होती है। अतिरिक्त मांग की स्थिति में उत्पादन में वृद्धि नहीं होती है।

कीमतों पर प्रभाव (Effects on Prices)

क्योंकि अर्थव्यवस्था पहले से ही पूर्ण रोजगार की स्थिति में होती हैं, जिसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्धि संभव नहीं हो पाती। अतः अतिरिक्त मांग की स्थिति में वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होती जाती है।

अतिरिक्त मांग को ठीक करने के उपाय (Measures to Correct Excess Demand)

अतिरिक्त मांग को ठीक करने के प्रमुखता तीन उपाय है:

- राजकोषीय उपाय (Fiscal Policy)
- मौद्रिक उपाय (Monetary Policy)
- अन्य उपाय (Other Measures)

राजकोषीय उपाय (Fiscal Policy)

सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure) :

सार्वजनिक व्ययों में कमी

करारोपण (Taxation):

सरकार द्वारा करों में वृद्धि किया जाना चाहिए।

सार्वजनिक ऋण (Public Debt):

अतिरिक्त मांग की व्यवस्था में सरकार को अधिकाधिक मात्रा में लोगों से ऋण वसूल करना चाहिए। इस प्रकार प्राप्त किए गए धन को केवल उत्पादन कार्यों में लगाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

परिणामस्वरूप एक और जनता में क्रय शक्ति की कमी हो जाती है और दूसरे उत्पादन की मात्रा भी बढ़ने लगती है।

बचत का बजट (Surplus Budget):

प्रत्येक माह की स्थिति में सरकार को बचत का बजट बनाना चाहिए। बचत का बजट उसे कहते हैं, जिसमें सार्वजनिक व्यय की तुलना में सार्वजनिक आय अधिक होती है।

मौद्रिक उपाय (Monetary Policy):

मात्रात्मक उपाय
बैंक दर (bank rate) - बैंक रेट में वृद्धि
खुले बाजार की क्रियाएं (Open Market Operations)- सरकारी प्रतिभूतियों का विक्रय
नकद कोष अनुपात (CRR)- नकद कोष अनुपात में वृद्धि
सांविधिक तरलता अनुपात (SLR) - SLR में वृद्धि

गुणात्मक उपाय
ऋणों की सीमांत मार्जिन (Margin Requirements of Loans)
साख की राशनिंग (Rationing of Credit)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अन्य उपाय

आयत और निर्यात नीति: आयत बदने एवं निर्यात को घटाने के प्रयास होने चाहिए

मजदूरी नीति

उत्पादन में वृद्धि

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*